April 2016 (17) 6/21

28 119-247 Thursday

(2) तुलसी - कथा।

B.A. Part I

Huli Hons

और कोई दूसरा हो सकता है। राम के प्रेम
रूपों का युगचेतना पर व्यापक प्रभाव
पड़ा तथा व्यापक समर्थन भी मिला।

तुलसी ने अपने युग की
परिस्थितियों का गहरा अध्ययन किया था।
उसकी विषमताओं और अंतर्विरोधों को ठीक
से पहचाना था। तथा इसी के आधार पर
इन्होंने काव्य की रचना की है। कहा जाता
है कि बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े
लोकनायक तुलसीदास हुए। लोकनायक
वही हो सकता है जिसमें समन्वय की
भावना हो। तुलसीदास ने राजा-प्रजा,
ब्राह्मण-शूद्र, सगुण-निर्गुण, लोक-वेद-
लोकमत इत्यादि का समन्वय कर समन्वयता
एवं एकता का संदेश दिया। इन्होंने
शंकर-राम, विष्णु और जीवन आदि का
समन्वय कर समाज को अच्छा संदेश दिया।

तुलसीदास भक्ति-परिवार
में फैली जनसाधारण की नौका के कर्णधार
कहे जा सकते हैं। इन्होंने सगुण भक्ति के
आलोक में राम की भक्ति भावना को
अपनाया तथा इन्हीं की भक्ति के आधार
पर संसार से पार उतरने की बात कही।
इसमें श्रद्धा एवं समर्पण की बात कही
गई है।

दर्शन के क्षेत्र में वे
रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन से
प्रभावित हैं —

सीय राम मय सब जग जानी
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।

कथा:—

(3) B.A. Hons part I
तुलसी 17/6/21
कविता:

May 2016
23
Monday

भाषा पर तुलसी का पूरा अधिकार था। इन्होंने अवधी और ब्रजभाषा इन दोनों प्रसिद्ध साहित्यिक भाषाओं में काव्य रचना की। इनकी भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल तथा कोमल है। इन्होंने अपने युग में प्रचलित सभी काव्य शैलियों में काव्य रचना की।

तुलसीदास ने अपने काव्य में सभी तरह के अलंकारों का प्रयोग किया है। पर प्रधानता रूपक और रूपातिशयोक्ति तथा उपमा, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा इत्यादि अलंकारों की बहुलता रूपकों ही है।

कुलमिलाकर ऐसा लगता है कि तुलसीदास जैसा किसी कवि विशेष का न होकर एक विचार संस्कृतिक आंदोलन का हो, जिसने उनकी समाज के आदर्श के मूल्यों को बदल देना जिसका लक्ष्य रहा है और जिसने उनकी, वर्तमान और भविष्य को एक धागे में पिरोकर आदर्शों का चिरस्थायी दीप जलाया है।